ISSN - 2231 - 2749

NUMBER - 31

2018

# JOURNAL

## OF THE

# MADHYA PRADESH ITIHAS PARISHAD

EDITORS

Prof. R. N. Shrivastava

Prof. Vandana Gupta

# Peer Team

**Professor Naveen Gideon**
Department of History
Govt. Auto. Girls P.G. College of Excellence, Sagar (M.P.)

**Professor B. K. Shrivastava**
Department of History
Dr. Harisingh Gour University, Sagar (M.P.)

**Professor R. K. Ahirwar**
Department of A.I.H.C & Archaeology
Vikram University, Ujjain (M.P.)

**Professor Meena Shrivastava**
Department of History
Govt. K.R.G. Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)

**Professor Madhubala Kulshreshtha**
Department of History
Govt. K.R.G. Girls P.G. College, Gwalior (M.P.)

Prof. Naveen Gideon
Secretary
Madhya Pradesh Itihas Parishad
Opp. Police Station, Near Lal School Gopalganj, Sagar - 470001 (M.P.)
Cell : 9425425477, 9425020650 E-Mail : mpip1958@gmail.com

17. वेदों में वर्णित मानवीय मूल्य एवं प्राकृतिक संतुलन 82
*डॉ. विजया दुबे*
18. कबीर पंथ : सिख धर्म के उद्‌भव का आधार पंथ 86
*डॉ. जरीना जॉन चौधरी*
19. वैदिक कालीन संगीत परम्परा 88
*डॉ. गीता राजपूत*
20. कोयला उद्योग का इतिहास : चिरमिरी के विशेष सन्दर्भ में 92
*अभिषेक अग्रवाल*
21. कलचुरि कालीन प्रमुख सरोवर (रतनपुर के कलचुरियों के विशेष संदर्भ में) 98
*डॉ. अंजना झारिया*
22. देवगिरी दुर्ग : एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण 101
*डॉ. किरन दुबे*
23. संगीत एवं चित्रकला का समन्वय रागमाला/राग-रागिनी चित्र 104
*डॉ. कुमकुम माथुर*
24. संस्कृत पाण्डुलिपियों में गोंड़ इतिहास के स्रोत (गढ़ा-मण्डला के संदर्भ में) 109
*डॉ. रजनी शर्मा*
25. कलचुरि कालीन नोहटा के जैन एवं जैनेतर पुरावशेष-एक विशिष्ट दृष्टि 119
*डॉ. रंजना जैन*
26. श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र ''मुक्तागिरी मंदिर'' 126
*डॉ. विजेता चौबे*
27. ब्रिटिश कालीन भारत में नारी की स्थिति : एक पुनरावलोकन 130
*डॉ. अंजलि दुबे*
28. गाँधीवादी विचारों के समसामयिक अर्थ-संदर्भ 136
*डॉ. पंकज सिंह*
29. डॉ. राममनोहर लोहिया का मडगाँव सत्याग्रह (गोवा मुक्ति संग्राम के संदर्भ में) 139
*डॉ. आर.एन. श्रीवास्तव*
30. मालवा में बोधिसत्व मैत्रेय 142
*डॉ. रामकुमार अहिरवार*
31. गौंड शासक एवं उनकी वर्तमान स्थिति 145
*डॉ. संतोष कुमार तिवारी*
32. बुन्देलखण्ड की विलुप्त होती विरासतें, दुर्ग व किले 152
*कमलेश अहिरवार*
33. जंगल सत्याग्रह 1930 (गंधू भोई के विशेष संदर्भ में) 157
*कु. रेखा पटेल*
34. खजुराहो मूर्ति शिल्प में पशुओं का अंकन (कन्दरिया महादेव मंदिर के विशेष संदर्भ में) 160
*रेनू विश्वकर्मा*

# श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र ''मुक्तागिरी मंदिर''

डॉ. विजेता चौबे
प्राध्यापक - इतिहास
ज. हों. शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल (म.प्र.)

सतत् सतपुड़ा कह रहा अक्षत् न्याय सतधार,
मुक्तागिरी आ देख लो, दिखता शिवपुर द्वार,
गगन चूमते शिखर हैं, रहे एक से एक,
युवा मेहा ही जल भरे, करते हैं अभिषेक।

- आचार्य विद्यासागर

**विहंगम दृश्य**

महाराष्ट्र और बैतूल (मध्यप्रदेश) के सीमावर्ती क्षेत्र परतवाड़ा के निकट खरपी ग्राम में स्थित सतपुड़ा की पर्वत श्रृंखला के मध्य जैन तीर्थंकरों के मंदिरों की एक अनोखी श्रृंखला है, जो तीर्थ मुक्तागिरी के नाम से प्रसिद्ध है। मुक्तागिरी को प्राचीन जैन प्राकृत ग्रंथ में निर्वाण क्षेत्र कहा गया है, जिसमें मुक्तागिरी का उल्लेख मेंढागिरी के नाम से किया गया है। इस ग्रंथ में लिखा गया है कि -

अचलपुर - वार न्यारे - ईसान मयनि मेंढागिरी सिहारे।
ओध्याय कोटि मुनि निव्वान गया नामो तैसीम।।

क्योंकि इस पर्वत पर तीन कोटि (प्रकार) के मुनियों को साधना के पश्चात् मोक्ष प्राप्त हुआ था। यह तीर्थ स्थल बैतूल जिले का स्वर्ग है। सतपुड़ा की ऊंची पहाड़ियों के मध्य 52 जैन मंदिर बने हुए हैं, जिसका निर्माण सम्राट खाखेल के कार्यकाल का माना जाता है। ये सभी मंदिर प्राचीन कलाकृति के बने हुये हैं। 40 नम्वर के मंदिर के गर्भ से प्राप्त ताम्रपत्र के विवरण से पता चलता है कि इस क्षेत्र का संबंध सम्राट श्रेणिक बिम्बसार के साथ बताया गया है।

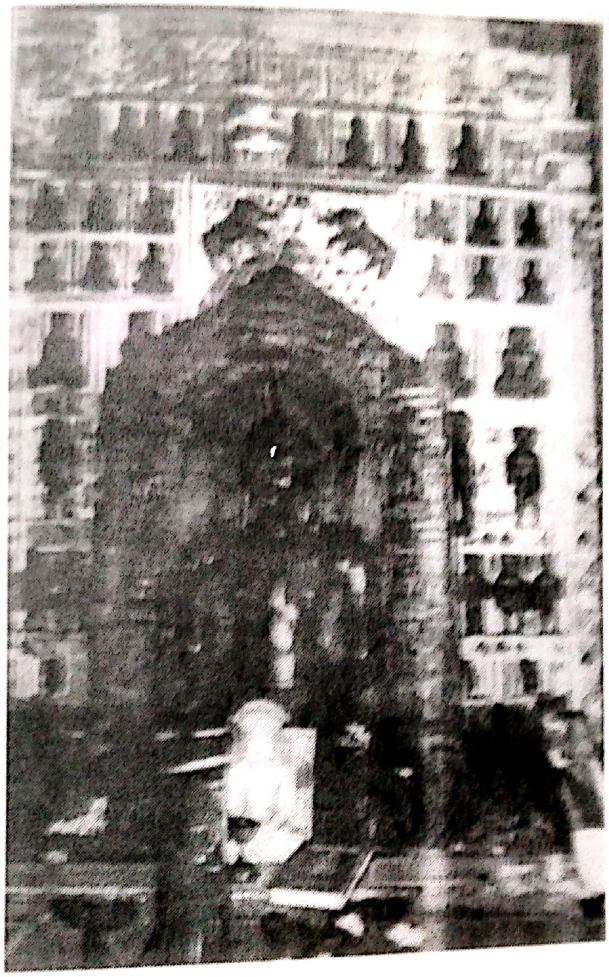



जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी

पर्वत पर जाने के लिये 250 सीढ़ियों का रास्ता है और उतरने के लिये दूसरी ओर से 350 सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। श्रद्धालुओं का मानना है कि 600 सीढ़ियों को पार करने से एक वंदना पूर्ण मानी जाती है। ऐसी किंवदंती है कि 1000 वर्ष पूर्व मंदिर क्रमांक 10 के पास ध्यानमग्न मुनिराज के सामने एक मेंढ़ा पहाड़ की चोटी से गिरा, मुनिराज ने उसके कान में णमोंकार मंत्र का उच्चारण किया, जिससे उसे स्वर्ग प्राप्ति हुई और वह मुनिराज के दर्शन के लिये यहाँ आया। अतः इस स्थल को मेंढ़ागिरी भी कहा जाता है। तब से इस निर्वाण स्थल पर प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि में देव प्रतिमा पर केसर की वर्षा स्वतः होती है, जिसे अगले दिन प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। केसर के छींटे आज भी दसवें मंदिर में देखी जा सकती है। इस मंदिर का निर्माण अचलपुर के गोंड राजा इल ने करवाया था। कुछ जानकार लोगों का कहना है कि मुक्तागिरी को ''मुक्ता बरसे शीतलनाथ का डेरा'' भी कहा जाता है। जैनियों के दसवें तीर्थंकर शीतलनाथ जी के सृमवशरण के समय से उक्त पंक्तियाँ प्रचलित हैं। बताते हैं कि दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जी सृमवशरण के समय इस पर्वत पर आये थे, तब यहाँ मोतियों की वर्षा हुई थी, तभी से इसे मुक्तागिरी के नाम से पहचाना जाने लगा। सभी मंदिरों

का निर्माण काले पत्थरों से हुआ है। प्रत्येक मंदिर में बरामदा और गर्भगृह है, जिसमें जैन तीर्थंकरों की प्रतिमायें विराजमान हैं। प्रतिमायें काले एवं सफेद संगमरमर की बनी हुई हैं।

सभी मंदिर परस्पर जुड़े हुए हैं। अंदर ही अंदर इनमें गुप्त मार्ग बने हुए हैं। इन बावन मंदिरों में से 10, 26, 31, 35, 40 क्रमांक के मंदिर कलात्मक बने हुए हैं, 10 नम्बर का गुफा वाला मंदिर खाखेल सम्राट के कार्यकाल का बना हुआ है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि इस मंदिर के गर्भगृह में जैन आगम के अनुसार त्रिकाल चौबीसी निर्मित है अर्थात् तीनों कालों के तीर्थंकर को त्रिकाल चौबीसी कहा गया है।

26 नम्बर का मंदिर मूल नायक पार्श्वनाथ जी का है। यहाँ पर भगवान पार्श्वनाथ की सप्तफणी शिल्पकला की अतिशय सजीव प्रतिमा है, जो लगभग 115 वर्ष पुरानी है। अब इस मंदिर के गर्भगृह में चारों ओर काँच लगा दिये गये हैं, जिससे सभी ओर प्रतिमा ही प्रतिमा दृष्टिपात होती हैं। यह अनोखा मंदिर है।

40 नम्बर का मंदिर पर्वत के गर्भ में बना हुआ है, इसके स्तम्भों एवं छत पर अत्यन्त सुन्दर नक्कासीपूर्ण कार्य किया गया है। भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा भव्य व दर्शनीय है। इसी गुफा मंदिर के समीप लगभग 250 फीट ऊंचाई से पानी गिरता है, जिससे रमणीक जलप्रपात निर्मित हुआ है, जो उस स्थान को और भी रमणीक बनाता है। पर्वत पर पहुँचने के लिये सघन वन की हरियाली और जलप्रपात का संगीत अपूर्व शांति एवं उल्लास भर देता है और हृदय भक्तिभाव से भर जाता है। इस पावन क्षेत्र की अभिव्यक्ति शब्दों में नहीं स्वयं दर्शन कर अनुभव की जा सकती है।

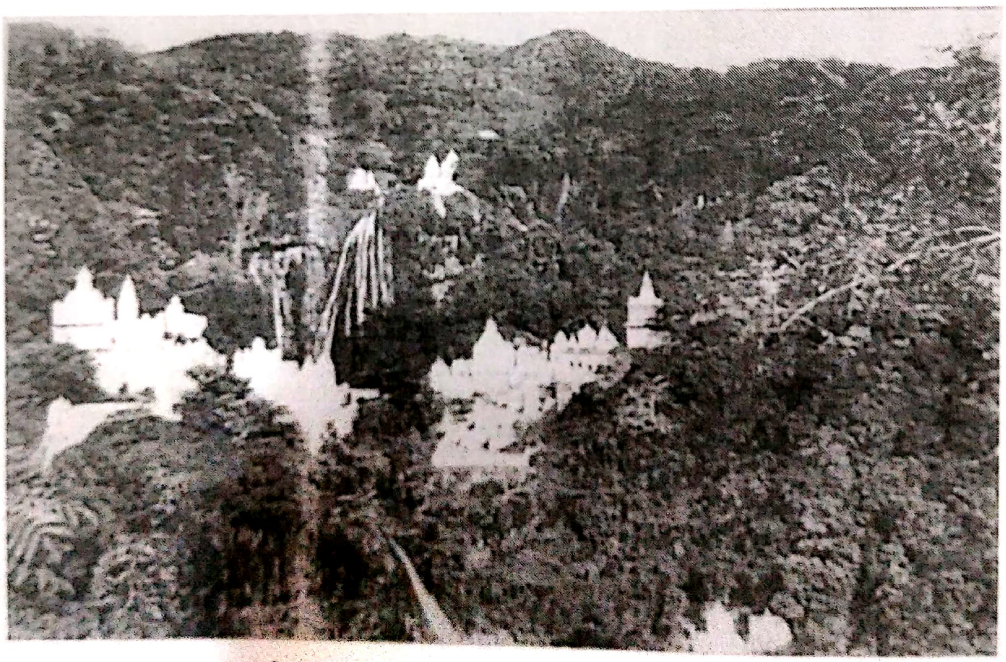

जैन तीर्थ मुक्तागिरी का विहंगम दृश्य

सभी मंदिरों में सुधार और आधुनिक तरीकों से सुधार का कार्य जारी है। यहाँ पर अब आधुनिक टाईल्स का उपयोग हो रहा है। इन मंदिरों का रखरखाव एवं मंदिरों की पूजा-अर्चना तथा पर्यटकों को मार्गदर्शन आदि व्यवस्था का कार्यभार जैन सम्प्रदाय द्वारा किया जाता है, जो महाराष्ट्र के निवासी हैं। संस्था में लगभग 25-30 कर्मचारी कार्यरत हैं। मंदिरों में प्रतिदिन पूजा-अर्चना के लिये अलग-अलग पुजारी नियुक्त हैं। यहाँ पर धर्मार्थियों एवं पर्यटकों के लिये धर्मशाला बनी हुई है। प्रतिदिन धर्मार्थियों की संख्या इस क्षेत्र में बढ़ती जा रही

है। यह सिद्ध क्षेत्र महात्माओं की तपःस्थली होने के कारण पवित्र स्थली बन चुका है। जहाँ जैन उत्सव धूमधाम से मनाये जाते हैं। प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को यहाँ मेला लगता है, जिसमें पर्यटकों के साथ दिगम्बर जैन धर्मावलम्बियों द्वारा उत्सव मनाया जाता है। धार्मिक दृष्टि से यह स्थल महत्वपूर्ण जैन तीर्थ स्थल बन चुका है।

ऐतिहासिक दृष्टि से क्षेत्र के मंदिर हिन्दू-मुस्लिम एवं जैन कला शैली का मिला-जुला नमूना है। पहाड़ी क्षेत्र होने के बावजूद भी मंदिरों का रख-रखाव बहुत अच्छा है। जैन संगठनों द्वारा जो पुनर्निर्माण का कार्य किया जा रहा है, उससे उसकी वास्तविक सुन्दरता का क्षरण हो रहा है, चूँकि यह क्षेत्र बैतूल जिले में स्थित है। अतः मध्यप्रदेश का यह प्रमुख पर्यटन स्थल भी है। इसीलिये म.प्र. शासन एवं पुरातत्व विभाग को इस धरोहर को सहजने एवं संवारने, नियंत्रण के लिये उचित कदम उठाना चाहिये, जिससे इस धरोहर की ऐतिहासिकता और सौन्दर्य को सुरक्षित रखा जा सके।

## संदर्भ


1. श्री नेमीचंदजी जैन, प्रत्यक्ष मुलाकात द्वारा जानकारी हासिल की, श्री जैन मुक्तागिरी संस्थान के प्रमुख हैं।
2. जिला बैतूल गजेटियर - शासकीय प्रेस, ग्वालियर, वर्ष-1971
3. पत्रिका - सहकारिता के सौ वर्ष (1907-2007) जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित, बैतूल (म.प्र.)
4. लघुशोध प्रबंध - बैतूल जिले में स्थित मंदिरों की ऐतिहासिकता व इतिहास - संतोष कुमार मालवीय।
5. पत्रिका - सतपुड़ा समग्र - 8 फरवरी 2017